ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 13 28 मई से 3 जून, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 जे. कृ.-11

युवाओं के प्रेरणास्रोत लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति अभिनन्दन समारोह एवं युवा संकल्प दिवस का

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली रोहतक में भव्य आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य विद्वानों को विभिन्न सम्मानों से किया जायेगा विभूषित

दिनांक 12 जून, 2015

स्वामी इन्द्रवेश

कार्यक्रम

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य विरक्त सम्मान

स्वामी रामवेश जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान

आचार्य वेदव्रत शास्त्री (दयानन्द मठ रोहतक)

डॉ. शिव कुमार शास्त्री (पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति भजनोपदेशक सम्मान

कुलदीप आर्य (बिजनौर) एवं पं. मामचन्द पथिक (हरिद्वार)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति युवा संगठनकर्ता सम्मान

1. स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल)
2. रामनिवास गांधी (कोसली)
3. इन्द्रपाल आर्य (सिरसा)
4. जितेन्द्र सिंह (बल्लभगढ़)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य महिला संगठनकर्ता सम्मान

1. श्रीमती बिमला ग्रोवर (फरीदाबाद)
2. श्रीमती गायत्री मीना (नोएडा)
3. श्रीमती सुनीता खासा (रोहतक)
4. श्रीमती रेखा सैनी (पार्षद हिसार)

निवेदक

स्वामी आर्यवेश बिरजानन्द एडवोकेट प्रो. श्योताज सिंह ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

आचार्य सन्तराम आर्य बहन प्रवेश आर्या बहन पूनम आर्या

स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, (आश्रम) टिटौली (रोहतक)

दूरभाष :- 09354840454, 9466308110, 9013783101

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आस्तिकता का आधार

– श्रीमती सुधा सावंत

क्या ईश्वर है?
यदि है, तो कहाँ है?
क्यों माने हम ईश्वर को?
वह न तो दिखाई देता है न सुनाई देता है?

अक्सर कक्षा में विद्यार्थी भी यही कहते हैं कि उन्हें ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। अब विज्ञान की शिक्षा के साथ यह विचार भी बढ़ता जाता है कि जिसे देख सुन नहीं सकते, छू नहीं सकते, जिस पर प्रयोग नहीं कर सकते उसके अस्तित्व पर विश्वास नहीं करना चाहिए। परन्तु ऐसे नास्तिकतावादी यह भूल जाते हैं कि उन्होंने अपनी ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति को कितना सीमित कर लिया है। न ठीक से देख सुन पाते हैं न समझ पाते हैं।

विद्यार्थी की शंका के समाधान के लिए तो यह उदाहरण ही पर्याप्त होता है कि जैसे वे कक्षा में चलते हुए पंखों को देखकर या 'ट्यूब लाइट' को जलते हुए देखकर समझ लेते हैं कि 'विद्युत' है। किन्तु क्या वे विद्युत को देख पाते हैं? ''नहीं।'' ऐसे ही जब वे हंसते, गाते, नाचते-कूदते बच्चों को, जीव-जन्तुओं को देखते हैं तो उन्हें समझ लेना चाहिए कि ईश्वर है, वही सर्वशक्तिमान है और उसकी ही शक्ति से जीवमात्र प्राणवान् है, क्रियाशील है। उस ईश्वर को इन ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा नहीं देखा या सुना जा सकता है उसे तो बस अन्तरात्मा में अनुभव किया जा सकता है। हमारे ज्ञान के लिए यजुर्वेद के बत्तीसवें अध्याय का तीसरा मंत्र इस प्रकार है :-

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हिं सीदित्येषा यस्मान्न जातऽइत्येषः॥

– यजुर्वेद अध्याय 32, मंत्र 3

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य में इसका भावार्थ इस प्रकार किया है :-

भावार्थ : (''हे मनुष्यों! जो कभी देहधारी नहीं होता, जिसका कुछ भी परिमाण सीमा का कारण नहीं है, जिसकी आज्ञा का पालन ही नामस्मरण है जो उपासना किया हुआ अपने उपासकों पर अनुग्रह करता है वेदों के अनेक स्थलों पर जिसका महत्त्व कहा गया है जो न ही मरता, न विकृत होता न नष्ट होता है, उसी की उपासना निरन्तर करो। जो, इससे भिन्न उपासना करोगे तो महान पाप से युक्त होकर आप लोग दुख क्लेशों से नष्ट होंगे।''

तो उससे स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर को किसी रूप में या किसी स्थान विशेष पर नहीं देखा जा सकता। वह तो सर्वव्याप्त है। उसे तो केवल ज्ञान चक्षुओं से समझा जा सकता है। प्रकृति के कण-कण में, फल-फूल में, हर जीव में उसके अस्तित्व को अनुभव किया जा सकता है।

वह कैसे करें? तो देखिए, जैसे फूल है। उसे सूर्य का प्रकाश मिलता है अच्छी खाद, हवा, पानी, मिलता है तो फूल खिलकर अपनी पूर्णता को प्राप्त हो जाता है और सुगन्ध बिखेरता है। तो ये देवता सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, आकाश उसे पूर्णता प्रदान करते हैं। और इन देवों का भी आदि देव है परमेश्वर। हम उसे पहचानें कैसे? सुबह सूर्य नमस्कार करें। प्राणायाम करें। व्यायाम करें। अपने शरीर को, मन-बुद्धि को शुद्ध प्रकाश दें, वायु दें, वेद तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन मनन करके बुद्धि को ज्ञान से युक्त करें, उसे पूर्ण विस्तार दें। इस प्रकार स्वयं अन्तरात्मा में ईश्वर की अनुभूति कर पायेंगे। यही बात बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने कही है और यही सत्य अनपढ़ किन्तु मेधावी कबीर ने इस रूप में प्रतिपादित किया है :-

कस्तूरी कुण्डलि बसै, मृग ढूंढै बन माहि।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखत नाहि॥

यहाँ संत कबीर के 'राम', दशरथ पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम नहीं, वरन् निराकार ईश्वर का पर्याय है। क्योंकि संत कबीर निर्गुणभक्ति धारा के कवि थे। जो सत्य है वह सभी के लिए समान है। ईश्वर को अपनी अन्तरात्मा में ही खोजना चाहिए।

ईश्वर को खोजने का मार्ग हमें आर्य समाज के नियमों में मिलता है। समाज का दूसरा नियम कहता है :-

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

यजुर्वेद का निम्नलिखित मंत्र इस बात का प्रमाण है :-

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

– यजुर्वेद अध्याय 13, मंत्र-4

ऋषि दयानन्द सरस्वती इसका भावार्थ करते हुए लिखते हैं :-

''जब सृष्टि प्रलय को प्राप्त होकर प्रकृति में स्थिर हो जाती है और फिर उत्पन्न होती है उसके आगे जो एक जागता हुआ परमात्मा वर्तमान रहता है, उस समय सब जीव मूर्छा सी पाए हुए होते हैं। वह कल्प के अंत में प्रकाश रहित पृथ्वी आदि सृष्टि और प्रकाश सहित सूर्य आदि लोकों की सृष्टि का विधान, धारण और सब जीवों को कर्मों के अनुसार जन्म देकर सबके निर्वाह के लिए सब पदार्थों का विधान करता है। वही सबके द्वारा उपासना करने योग्य देव है, यह जानना चाहिए।''

वेदों का ज्ञानहमें ईश्वर के प्रति आस्थावान बनाता है, हमें हमारे जीवन के प्रति आस्थावान बनाता है और प्रकृति के प्रति भी सजग करता है। हम अपने को पहचान कर, अपने व्यक्तित्व का विकास कर, सौ वर्ष या उससे भी अधिक समय तक जीवित रह कर, ईश्वर की इस सुन्दर सृष्टि को देखें, उसके गुणों का गान करें और उसी के यश की चर्चा सुनें किसी भी प्रकार की दीनता को स्वीकार न करके पूर्ण स्वास्थ्य के साथ, पूरी शक्ति के साथ अपना जीवन बिताएं व ईश्वर के गुणों का गान करें, यही तो इस मंत्र में हम कामना करते हैं :-

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम् श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम् शत मदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्॥

– यजुर्वेद अध्याय 36, मंत्र-24

वेद हमें बताते हैं ईश्वर सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ। किन्तु हम निरन्तर उस सर्वज्ञ को जानने का प्रयत्न करते रहते हैं। उसके बारे में एक ही जीवन काल में पूरी तरह से ज्ञान प्राप्त कर लेना सम्भव नहीं, अतः अनेक जन्मों तक हम उसे जानने का प्रयत्न करते रहते हैं।

जब योगेश्वर श्री कृष्ण अपने प्रिय मित्र अर्जुन को युद्ध करने की प्रेरणा दे रहे थे, कर्त्तव्य कर्म करने की प्रेरणा दे रहे थे तो अर्जुन का मन चलायमान हो रहा था। अर्जुन श्री कृष्ण से पूछता है कि क्या श्रद्धावान होते हुए भी यदि किसी का मन योग से भ्रष्ट हो जाए तो क्या वह पूरी तरह नष्ट हो जाता है? तो श्री कृष्ण कहते हैं कि कल्याण करने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। एक जन्म में लक्ष्य पूरा न मिलने पर वह अगले जन्मों में फिर सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता ही रहता है।

श्री कृष्ण कहते हैं।।

तत्र तं बुद्धि संयोग लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते व ततो भूयः संसिद्धौ कुरूनन्दन॥

– गीता अध्याय 6.43

इस प्रकार परम् ज्ञान को जानने के लिए जन्म जन्मान्तर तक मनुष्य प्रयत्न करता ही रहता है पूर्व जन्म में प्राप्त किया ज्ञान बना रहता है और वह उससे आगे का ज्ञान प्राप्त कर सफलता की ओर पूर्ण ज्ञान प्राप्ति की ओर बढ़ता है।

आज के मनोवैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि बालक का मस्तिष्क अब ''धुली स्लेट'' की तरह नहीं होता कि शिक्षक जो चाहे उस पर लिख दे। वे बीज रूप में अनेक गुण-अवगुण अपने भीतर संजोये होते हैं उनके गुणों को उभारना और पूर्णता तक पहुँचाना ही शिक्षक का काम है। मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोगों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि माता-पिता के अर्जित गुणों का असर भी उसकी संतति पर पड़ता है। अतः माता-पिता स्वयं भी ईश्वर के प्रति आस्थावान हों और बच्चों के लिए भी वैसा ही वातावरण बनायें, इसकी आवश्यकता है। क्योंकि जैसे नदियों का लक्ष्य गंतव्य सागर तक पहुँचना है ऐसे ही जीवात्मा का लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है। और यह प्राप्ति आत्मानुभूति के रूप में ही होती है। परमदार्शनिक योगिराज भर्तृहरि जी ने भी ईश्वर की सत्ता का एकमात्र प्रमाण 'स्वानुभूत्येकमानाय' कह कर दिया है। यदि हम वास्तव में ईश्वर को जानना चाहते हैं तो मन-दर्पण को साफ करें। ईश्वर की सत्ता का अनुभव हम मन में ही कर सकते हैं। योगाभ्यास द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सरल व प्रशस्त होता है। उस मार्ग पर चलते हुए हम अपने लक्ष्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

Arya, the word of respect

The word of Arya means noble. Nobility is an ornament of a person. This word is always depicted in the vedas. 'Karnvanto Vishwamaryam' (Make the world noble) is our motto or a symbol of our culture. This word has been used to address the person. Our two volumes, the Ramayan and the Mahabharat, show its usage in the field of communicative dialogue. It is graceful, showing our culture. 'Aryan race' was called for consolidation.

The 'Hindu' word used in place of the 'Arya' is quite wrong. We have achieved it from outside. It does not carry out the sense of the word 'Arya'. The outsiders called us as thieves and rogues by calling us by the name of 'Hindu' in the sense of an abuse.

What a mean and uncivilized sense they had for us! We should consider and reconsider to pose our identity which is undoubtedly the Aryan one. Why do we underrate this word of 'Arya'? Let us treat this word rightly and leave out all what is ungraceful address. The word 'Hindu' is not a substitute for 'Arya'.

By- Brij Bala Arya 'Dhiman Shree'
(Research Scholar)] Sahibabad (GBD.)

The Inner Beauty

There is an anecdote about president Lincoln who was not a good-looking person. Once a philadelphian delegation went to meet him, and they introduced one of their members saying, 'He has been good enough to paint and present to our league room a most beautiful portrait of yourself.' President Lincoln thought it over and, turning to the painter, said: 'I presume, sir, in painting that portrait you took your idea of me from my principles and not from my person.' And that is what is needed. The purity of mind and heart shines through the body. Besides, pure and illumined souls radiate holy and harmonious vibrations which have not only a pleasant but also an elevating influence on all those who come in touch with them.

Adapted from- 'Meditation and spiritual Life'

सार्वदेशिक सभा द्वारा राहत कार्य प्रारम्भ
नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की दिल खोलकर सहायता करें

नेपाल में आये भयंकर भूकम्प से हुए जानमाल के नुकसान से आप भली–भांति परिचित ही होंगे। 25 अप्रैल को दोपहर 11.45 बजे 7.9 तीव्रता के ताकतवर भूकम्प के कारण नेपाल में जब पृथ्वी ने कांपना प्रारम्भ किया और जो तांडव शुरू किया उससे नेपाल देश का अधिकांश भाग विनाश की चपेट में आ गया। जगह–जगह मकान, पेड़–पौधे गिर गये और संचार माध्यम ठप पड़ गया। नेपाल की ऐतिहासिक धरोहरें तथा बड़ी–बड़ी बिल्डिगें ताश के महल की तरह धराशाई हो गई। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भूकम्प कितना भीषण तथा विनाशकारी था। इस प्रलयंकारी भूकम्प के कारण नेपाल में जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है तथा कई हजार लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई है तथा हजारों लोग अपना घर–बार तथा अपना सब कुछ गंवा चुके हैं। घायलों की स्थिति और भी ज्यादा खराब है। भूकम्प का समाचार प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आहूत की गई और राहत कार्यों के लिए चर्चा की गई। तत्काल नेपाल में काठमांडू स्थित आर्य समाज के माध्यम से पीड़ितों को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। नेपाल में दूर–दराज के इलाकों में जहां सब कुछ नष्ट हो गया है और वहाँ पर अभी तक कोई दल राहत के लिए नहीं पहुँचा है ऐसे स्थानों पर राहत पहुँचाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

आर्य समाज मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है। पूर्व में आये विभिन्न दैवीय प्रकोपों में आर्य समाज ने प्रशंसनीय राहत कार्य किया है। इस बार भी नेपाल में आये इस प्राकृतिक आपदा में पीड़ित मानवता को सहायता प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने बड़े पैमाने पर प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं तथा एक राहत दल नेपाल जाने के लिए तत्पर है।

सार्वदेशिक सभा ने देश की समस्त आर्य जनता से प्रार्थना की है कि पीड़ितों की सहायतार्थ वे आगे आयें और अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा सीधे सार्वदेशिक सभा कार्यालय "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर भेजें। जिससे भूकम्प प्रभावित लोगों को सहायता तथा राहत पहुँचाई जा सके। आर्य समाज इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में सदा ही अग्रणी रहा है। इस पुण्य कार्य हेतु आप सदैव की भांति इस आपदा में भी अधिक से अधिक सहयोग राशियाँ भिजवा कर सार्वदेशिक सभा के राहत कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे। जो कार्यकर्ता भूकम्प पीड़ित राहत कार्यों में सहयोग देना चाहते हैं उनका भी स्वागत है वे सभा कार्यालय में सम्पर्क करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग पीड़ितों के लिए बहुत बड़ा सम्बल होगा।

स्वामी आर्यवेश	प्रो. विट्ठलराव आर्य	पं. माया प्रकाश त्यागी
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ई मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in, aryavesh@gmail.com

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

सत्य का वास्तविक स्वरूप

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

अथर्ववेद (12/1/1) के **'सत्यं बृहत् ऋतम् उग्रम्....।** इस मन्त्र में पृथिवी के धारक तत्वों की गणना की गई है। यहाँ केवल सत्य पर विचार किया जा रहा है। सत्य का अर्थ केवल वाचिक सत्य अर्थात् सत्य भाषण मात्र नहीं है, अपितु इसका व्यावहारिक रूप अभीष्ट है। इसके अनुसार सत्य का पक्ष लेना, सत्य मार्ग पर आरूढ़ रहना, असत्याचरण को छोड़कर सत्याचरण का ग्रहण इत्यादि रूपों में सत्य का ही विस्तार है। सत्य के विस्तृतरूप के विषय में ही महर्षि दयानन्द कहते हैं – **'सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'** यहाँ सत्य का अर्थ केवल वाचिक सत्य न होकर व्यावहारिक सत्य ही है, जो पूरे जीवन से सम्बन्धित है।

सत्य से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है – **नास्ति सत्यात् परोधर्मः।** इतना ही नहीं, अपितु सत्य स्वयं ही धर्म है। इसीलिए कहा गया है – **'सत्यं वदन्तमाहुः धर्मं वदतीति।'** अर्थात् सत्य बोलने वाले के लिए कहा जाता है कि यह धर्म को कह रहा है। महाराज युधिष्ठिर सत्य के कारण ही धर्मराज कहलाए थे। महर्षि दयानन्द स्पष्ट रूप में कहते हैं – **'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।'** यहाँ केवल वाचिक सत्य नहीं है, अपितु दैनिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाला व्यावहारिक सत्य है। अथर्ववेद में इसी व्यावहारिक सत्य को राष्ट्र के धारकतत्वों में प्रथम स्थान दिया गया है, केवल वाचिक सत्य को नहीं। यदि व्यावहारिक रूप में सत्य का पक्ष नहीं लिया जायेगा, तो राष्ट्र विप्लवग्रस्त हो जायेगा, नष्ट हो जायेगा। निम्न उदाहरणों से अपनी बात को स्पष्ट करता हूँ –

महाराज शान्तनु का पुत्र देवव्रत पूर्ण युवा, विवाहयोग्य तथा पिता के बाद राज्य का अधिकारी है, किन्तु शान्तनु वृद्धावस्था में एक धीवर कन्या सत्यवती पर आसक्त होकर विवाह प्रस्ताव कर देते हैं। कहानी सबको याद है, वहीं देवव्रत अपने वृद्ध पिता की कामपिपासा की शान्ति के लिए दो प्रतिज्ञाएँ करता है।

(1) मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा, जिससे मेरी सन्तान भी मेरे पिता शान्तनु के राज्य की अधिकारिणी नहीं होगी तथा (2) मैं स्वयं भी राज्य ग्रहण नहीं करूँगा।

शान्तनु का विवाह हो गया तथा देवव्रत अपनी दोनों प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करने के कारण भीष्म कहलाए। यह वाचिक सत्य तो था, किन्तु क्या व्यावहारिक सत्य भी था? देवव्रत का यह कार्य नितान्त ही असत्य-अधर्मयुक्त था, क्योंकि राज्य का अधिकारी वही था तथा कवि का यह कथन बिल्कुल सत्य ही है कि, 'अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है।' देवव्रत ने वृद्ध पिता की वासनापूर्त्यर्थ राज्य छोड़कर अधर्म ही किया था। यदि हस्तिनापुर के सिंहासन पर शास्त्रवेत्ता, धनुर्धारी युवराज देवव्रत बैठे होते, तो महाभारत ही न होता तथा यह देश मिट्टी में न मिलता। तब नेत्रों तथा बुद्धि दोनों से ही निपट अन्धे तथा पुत्रमोह में अन्धे धृतराष्ट्र का जन्म ही न होता, दुर्योधन की तो बात ही क्या है? इसकी पुष्टि में मनु कहते हैं –

गुरोरप्यवलिप्तवस्य कार्याकार्यमजानतः
उत्पथप्रतिपन्नस्य कार्यंश्रेयोऽनुशासनम्।

यदि गुरु, माता-पिता आदि कोई भी कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विचार न करके गलत मार्ग पर चलने लगें, तो उनको भी अनुशासित करना ही श्रेयस्कर है, न कि उनकी इच्छापूर्ति! देवव्रत ने यही गलती की। उपनिषद् का ऋषि मुक्तकण्ठ से अपने शिष्य को कह रहा है – **यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नेतराणि।** पुत्र जो भी हमारे सुचरित हो, उनका ही अनुकरण करना, अन्यों का नहीं। यदि देवव्रत ने ऋषि के इस वचन को ही पढ़ लिया होता, तब भी वह कुमार्गगामी अपने पिता को रोक सकता था तथा उसे रोकना चाहिए था। तभी यह राष्ट्र सुरक्षित रहता। सत्य धर्म ही राष्ट्र को सुरक्षित रख सकता है, असत्याचरण नहीं। अब सत्य के वाचिक पक्ष को लेते हैं। सत्य बोलने का केवल यही अर्थ नहीं है कि मिथ्या न बोला जाए। इसका एक अति अनिवार्य अंग यह भी है कि जहाँ आवश्यकता पड़े, वहाँ मुंह बन्द न रखकर सत्य का पक्ष लिया जाए। उदाहरण देखिए – पहला उदाहरण है पितामह भीष्म का। वे कौरवों की उस सभा में भी विद्यमान थे, जबकि महारानी द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था। क्या यह सत्य – धर्मयुक्त कार्य था? शास्त्रज्ञ, विद्वान् पितामह उस समय एक शब्द भी नहीं बोले, जबकि उनके सामने ही उनकी कुलवधू की मर्यादा तार-तार की जा रही थी। यदि भीष्म विरोध करते, तो किसी की हिम्मत द्रौपदी को राजसभा में बुलाने की भी नहीं हो सकती थी। भीष्म ने तब असत्य अधर्म का पक्ष लिया। तब शास्त्रवेत्ता भीष्म को मनु की यह उक्ति स्मरण नहीं हो सकी – **'न ते वृद्धाः ये न वदन्ति सत्यम्।'** अर्थात् जो असत्य के विरुद्ध तथा सत्य के पक्ष में मुँह नहीं खोलते, वे आयु में बड़े होने पर वृद्ध कहलाने योग्य नहीं है। भीष्म भी ऐसे ही वृद्ध थे। द्रौपदी का अपमान पूरे राष्ट्र का अपमान था, जिस कारण आज भी हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। वह कैसा पितामह हैं, जिसके सामने उसकी पौत्री स्वरूपा कुलवधू को नंगी किया जा रहा हो तथा वह एक शब्द भी इसके विरुद्ध न बोले। धिक्कार है।

दूसरा उदाहरण – हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य समाज यह संगठन जालिम निजाम के विरुद्ध मोर्चा ले रहा था। गैर आर्य समाजी भी साथ देते थे। सत्याग्रहियों पर निर्मम अत्याचार हो रहे थे, किन्तु उस व्यक्ति ने जिसे सत्य तथा अहिंसा का अवतार कहा जाता है, एक शब्द भी इस अन्याय के विरुद्ध नहीं बोला। तभी तो बेधड़क उपदेशक कुंवर सुखलाल जी ने कहा था –

हमारी इमदाद न कर प्यारे गांधी।
पर यह तो कहदे कि बुरा हो रहा है।

गांधी को भी राष्ट्रपिता कहा जाता है, किन्तु यही राष्ट्रपिता इस राष्ट्रीय कार्य के समय मौन था। इस सत्य को सरदार पटेल ने इस तरह प्रकट किया था – हैदराबाद में मिलट्री एक्शन तीन दिन में इसीलिए सफल हो सका कि इसकी भूमिका पहले ही आर्य समाज ने तैयार कर दी थी। इसी सत्यवादी राष्ट्रपिता ने घोषणा की थी कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, किन्तु पाकिस्तान बन गया। सत्य के पुजारी की वह घोषणा कहाँ गई? गाँधी के इस असत्य ने ही पाकिस्तान को बनने दिया। यदि उस समय यह महात्मा अपने सत्य पर अटल रहते तो पाकिस्तान न बनता। शक्तिशाली राष्ट्र के दो टुकड़े हो गये तथा परस्पर विरुद्ध हो गये, जिसका परिणाम सबके सामने है ही।

ये उक्त पितामह तथा राष्ट्रपिता इन दोनों के असत्याचरण के कारण यह महान देश बर्बाद हो गया। इन लोगों से सुकरात तथा गैलीलियो जैसे लोग ही अच्छे थे, जो हंसते-हसंते विष का प्याला पी गये, किन्तु अपने सत्य से नहीं डिगे। महर्षि दयानन्द ने मौनव्रत धारण किया हुआ है। पास में ही कोई उच्च स्वर से भागवत का पाठ करने लगा। स्वामी जी मौन तोड़कर भागवत का खण्डन प्रारम्भ कर देते हैं। वे चुप भी रह सकते थे, किन्तु सामने असत्य को देखकर तथा सुनकर चुप रहना अधर्म है। एक अन्य अवसर पर वे कहते हैं – 'दयानन्द को तोप के आगे बांध कर भी पूछा जायेगा कि सत्य क्या है? तो उनके मुख से वेदों की श्रुति ही निकलेगी।' यही है सत्य का व्यवहारिक रूप। असत्य-अधर्म को सुनकर तथा देखकर उसके विरुद्ध अनिवार्य रूप में वाचिक तथा अन्य क्रियात्मक प्रतिक्रिया की जाए, यही है सत्य का वास्तविक स्वरूप।

– बी.-266, सरस्वती विहार, दिल्ली

गोवंश भारत की आर्थिक रीढ़ है

– डॉ. चम्पालाल गुप्ता

गाय विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, यह माता से बढ़कर विश्व के समस्त प्राणियों का भरण-पोषण करती है, इसीलिए इसे विश्व की माता कहा गया है, **'गावो विश्वस्य मातरः'**। गाय सब प्रकार के सुखों को देने वाली व सर्वविध कल्याणकारिणी है और एक गाय की सेवा से समस्त देवी-देवताओं का पूजन व रिद्धि-सिद्धि हो जाती है। गाय के दूध, घी, गोबर सब समृद्धि प्रदान करने वाले हैं, इसलिए गाय को समस्त वसुओं की माता कहा गया है।

गाय से प्राप्त होने वाला कोई पदार्थ ऐसा नहीं है, जिसकी उपयोगिता न हो। यहाँ तक कि उसके गोबर और मूत्र भी अत्यन्त उपयोगी हैं। उसके घी की यज्ञ में आहुति डालने से वर्षा होती है तथा धन-धान्य की वृद्धि व वातावरण की शुद्धि होती है। उसका दूध आरोग्य बढ़ाने वाला व बाल-बच्चों से लेकर वृद्धों रोगियों तक के लिए अमृत है। इसलिए आयुर्वेद में अनुमान रूप में उसका व्यापक उपयोग होता है। उससे मेधा की वृद्धि होती है। गौ के दुग्ध का पान कर ही हमारे ऋषियों ने महान वेद और शास्त्रों की रचना की थी और भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं गोचारण कर गोपाल की संज्ञा प्राप्त की थी।

गाय पर्यावरण को शुद्ध करने वाला सबसे उपयोगी जीव है। वैज्ञानिकों ने पाया कि गाय ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जो 24 घण्टे ऑक्सीजन छोड़ती है और उसकी सांसों में पर्यावरण को शुद्ध करने की अपार क्षमता है। इसलिए जहाँ गाएँ उठती-बैठती हैं, वहाँ पर्यावरण दूषित नहीं होता और पर्यावरण व स्वास्थ्य के संरक्षण में सहयोग मिलता है। इसके अलावा आधुनिक खोजों से यह भी पता चलता है कि गाय के गोबर में रेडियोधर्मिता को रोकने की महान क्षमता है और जहाँ गोबर का प्रयोग होता है, वहाँ रेडियो विकिरण धर्मिता का प्रभाव नहीं पड़ता। गाय के मूत्र की कीटाणु व रोगनाशिनी क्षमता को अब भारत में ही नहीं, विदेशों में भी स्वीकार किया जाने लगा है।

गाय भारत की स्वावलंबी अर्थव्यवस्था का आधार है। कृषि और गोपालन यहाँ का प्रमुख व्यवसाय है। कृषि में बैलों व गाय की गोबर खाद का व्यापकता से प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा गौदुग्ध व गौजन्य अन्य पदार्थों के क्रय-विक्रय द्वारा लाखों लोगों की आजीविका का निर्वाह होता है।

आधुनिक युग में जबकि रासायनिक खादों व कीटनाशकों के उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त होती जा रही है और लाखों एकड़ भूमि के बंजर हो जाने का खतरा तेजी से मंडराने लगा है व कीटनाशकों के लगातार प्रयोग से अन्न तथा अन्य कृषिजन्य पदार्थ तथा फल-फूलों में भी विषाक्तता बढ़ती जा रही है, उनके प्रभाव से कैंसर व ऐसे ही घातक रोगों का तेजी से संक्रमण बढ़ता जा रहा है, एक बार फिर सम्पूर्ण विश्व का ध्यान जैविक खाद व जैविक कीटनाशकों की ओर गया है और गाय के गोबर से बनी जैविक खाद व उसके मूत्र से तैयार कीटनाशकों की माँग विश्व स्तर पर तेजी से बढ़ती जा रही है।

अब विदेशों में रासायनिक खादों से उत्पन्न गेहूँ व अन्य अनाजों व फलों की अपेक्षा जैविक कृषि से उत्पन्न अनाज व अन्य खाद्य पदार्थों को महत्त्व दिया जाने लगा है और वे उसका मुँहमाँगा मूल्य चुकाने के लिए तत्पर हैं। इसके अलावा बाबा रामदेव व आयुर्वेद के बढ़ते प्रभाव के कारण गोमूत्र की माँग की तेजी से वृद्धि हुई है और उसकी खपत का आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा है। अंग्रेजी दवाओं के बढ़ते दुष्प्रभाव (साइड इफेक्ट) के कारण पंचगव्य से निर्मित औषधियों का प्रयोग भी बढ़ा है। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रसार ने गौघृत, दूध, दही आदि की उपादेयता को बढ़ा दिया है। पंचगव्य से अब केवल नाना प्रकार की औषधियों का ही निर्माण नहीं होता अपितु तरह-तरह से सौंदर्य प्रसाधन व दैनिक जीवन में उपयोगी अन्य वस्तुओं का निर्माण होने लगा है। इसके साथ ही आधुनिक गैस प्लांटों से बायोगैस व विद्युत का उत्पादन होने लगा है। बैलों की शक्ति व गौमूत्र से ऊर्जा का उत्पादन करने में भी सफलता प्राप्त की है, जिन्हें बिना डीजल बैलों की सहायता से चलाया जा सकता है। डेयरीजन्य उत्पादों की माँग बढ़ने के कारण भी गाय के दूध, घी आदि की माँग में वृद्धि हुई है। इन सबके कारण गौ का महत्त्व और आवश्यकता बढ़ी है। अब यदि गाय दूध न दें तो

भी उसके गोबर व मूत्र से इतनी आय हो जाती है कि गौपालन आर्थिक दृष्टि से मंहगा सौदा सिद्ध नहीं होता। अब जैविक खाद की इतनी माँग है कि गोबर टनों की बजाय किलो में बिकता है। व जितना उत्पादन होता है, कम्पनियाँ मुँह मांगे दामों पर उसे उठा लेती हैं। गाय का दूध 35-40 रुपये किलो सहजता से मिल जाता है तो पैक बंद गौमूत्र सौ रुपये प्रतिलीटर में भी उपलब्ध नहीं होता। श्री गोपाल गोवर्धन गौशाला, पथमेड़ा के संचालक स्वामी दत्तशरणानन्द जी ने बताया कि अब असली गौघृत की इतनी माँग है कि लोग कई-कई सौ रुपये किलो अग्रिम जमा कर भी शुद्ध घी प्राप्त करने के लिए आतुर रहते हैं और उसकी पूर्ति नहीं हो पाती। यद्यपि गौ से उत्पन्न पदार्थों ने संगठित उद्योग का रूप धारण नहीं किया है, लेकिन जिस दिन भारत की अन्य प्राकृतिक वस्तुओं की तरह विदेशी कम्पनियों का ध्यान इस ओर चला गया, यहाँ गौघृत, गोबर, मूत्र आदि दुर्लभ हो जायेंगे और भारत में एक नव गव्य आर्थिक क्रांति का सूत्रपात होगा और शास्त्रों में अब तक जो गोबर में लक्ष्मी व गोमूत्र में गंगा का वास होने की लोकोक्ति चल रही है, वह वास्तव में यथार्थ रूप धारण कर लेगी।

अतः समय की आवश्यकता है कि हम गाय के महत्त्व को स्वीकार करते हुए पंचगव्य औषधियों, जैविक खादों, कीटनाशकों, सौंदर्य प्रसाधनों आदि के उपयोग को अधिकाधिक प्रोत्साहन दें, उनके उपयोग पर व्यापक स्तर पर शोध व अनुसंधान करें व गौजन्य पदार्थों के विपणन की व्यवस्था करें, इससे न केवल गाय का महत्त्व बढ़ेगा, बल्कि हमारा भारत देश भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और खुशहाल होगा।

सऊदी अरब में गायों का संरक्षण

– मुजफ्फर हुसैन

गाय का संरक्षण केवल उनके दूध और घी के लिए ही करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि गाय तो मनुष्य जाति की माँ है, उसकी दी हुई हर चीज इंसानों के लिए वरदान है। एक माँ अपने स्तन से जिस प्रकार बच्चे को दूध पिलाती है उसी प्रकार गाय समस्त मानव जाति को दूध पिलाती है। वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध हो चुका है कि गाय का दूध पीने से मस्तिष्क बलवान बनता है, जिससे उसकी स्मरण शक्ति अधिक मजबूत बनती है। जिसका मन और मस्तिष्क स्वस्थ बनेगा वह हमेशा अल्लाह को याद करेगा। इसीलिए मनुष्य समाज के विकास के लिए गाय का दूध एक बुनियादी जरूरत है। ऐसा लाभदायी पशु जो साक्षात् माता है, उसे मारना दुनिया का सबसे बड़ा पाप है।

गाय के वध के मामले में अनेक फतवे समय-समय पर आए हैं जिनमें गाय का माँस वर्जित किया गया है। परिस्थितिवश न तो उसे काटा जाए और न ही उसके माँस का भक्षण किया जाए। भारत में देववंद, बरेली, फुलेरीशशरीफ, लखनऊ और हैदराबाद जैसे अनेक स्थानों में गाय को लेकर बहस उठती रहती है, उनमें जो परिणाम सामने आए हैं वे गाय को नहीं काटने के पक्ष में आए हैं। गाय की सुरक्षा का पक्षधर जब इस्लाम है तो भारतीय मुसलमानों को यह सवाल उठाना ही क्यों चाहिए? मुसलमान स्वयं किसान हैं और गौपालन का व्यवसाय करते हैं, इसलिए समझदारी का तकाजा यह है कि इस विवादास्पद मुद्दे को हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर दें। भारत सरकार यदि सम्पूर्ण देश में गौवध पर पाबंदी लगा देती है तो मुसलमान निश्चित ही उसका स्वागत करेगा। देश के कानून की अवहेलना करने की सीख इस्लाम नहीं देता।

वास्तव में गाय की रक्षा के मामले में दोषी मुसलमान नहीं हैं, उससे भी अधिक दोषी भारत सरकार है, क्योंकि उसका लूला-लंगड़ा कानून और वोट बैंक की खुशामद इस मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा है। कोई यह कह सकता है कि सरकार यदि गोवध पर पाबंदी के लिए कड़े कानून नहीं बनाती तो इसमें कुर्बानी करने वाले का क्या दोष है? लेकिन क्या सारे काम कानून के भय से ही होने चाहिए? अपनी आत्मा की आवाज पर हम स्वयं किसी जीव के वध पर नैतिक दायित्व के रूप में प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा सकते? भारत में गाय और बैल का जो उपयोग होता है उसे देखते हुए स्वयं मुस्लिम ऐसा निर्णय लेंगे तो वह अधिक सुखद व स्थायी होगा।

मुसलमान अपने गौपालन के लिए मशहूर हैं। कई स्थानों पर गौशाला स्थापित करने में मुसलमानों ने सहयोग दिया है। सुफी संतों ने गायों को पाला है और गौभक्त होने का संदेश दिया है। नागपुर में ऐसे ही एक मुस्लिम संत और उनकी पत्नी गौशाला चलाया करते थे। ताजुउद्दीन बाबा सिद्ध गौभक्त थे। उनके उर्दू कवियों ने गाय का गुणगान करते हुए कविताएं लिखी हैं। हिन्दी में रसखान इसके लिए मशहूर हैं तो उर्दू में मेरठ के कवि मोहम्मद इस्माइल साहब प्रख्यात हैं जिनकी सरल और मधुर कविता को याद करके उर्दू कक्षाओं के विद्यार्थी गौमाता का यशोगान करते हैं। भारत के उपखण्ड का मुसलमान हर मामले में सउदी अरब को अपना आदर्श मानता है। क्या गाय के पालन के सम्बन्ध में भी उसे ऐसा ही करना चाहिए। भारत में गाय के प्रति एक विशेष प्रेम का कारण यह है कि गाय इस देश की माटी से जुड़ा हुआ प्राणी है। कृषि प्रधान देश में गाय का वही महत्त्व है जो अरबस्तान के लिए ऊँट का है। इसके बावजूद अरबी लोग गाय को इतना चाहते हैं और उसके लालन-पालन से कितना लाभ उठा रहे हैं। यह भारतीय मुसलमानों को जानने की आवश्यकता है। वास्तव में देखा जाए तो अलशरीफ फार्म नहीं बल्कि गौसेवा का एक जीवन्त आन्दोलन है।

सउदी अरब के अलख्सिराज नामक स्थान पर सूर्य उदय होता है तो हजारों गायें एक विशाल शेड की छाया तले आकर शरण लेती हैं। यहाँ कम्प्यूटर द्वारा चढ़े तापक्रम पर नजर रखी जाती है। उसके अनुसार गायों पर पानी की बौछारें बरसायी जाती हैं। शेड में स्वचालित पर्दे लगाये गये हैं। जिधर धूप होती है पर्दे उसी दिशा में तन जाते हैं। धूप के आने से इन गायों को बड़ी राहत मिलती है। इस शेड के बाहर औसतन 400 डिग्री सेल्सियस गर्मी होती है। 900 मीटर लम्बे शेड में दर्जनों डेजर्ट कूलर लगे हुए हैं। उक्त फार्म सऊदी अरब की राजधानी रियाद से सौ किलोमीटर दूर दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस फार्म को 'अलशफीअ' नाम दिया गया है। जिसका साधारण भाषा में अर्थ होता है 'मेहरबान' अर्थात् कृपालु। गाय के गुण के अनुसार ही उसका नाम है। वास्तव में यह पशु मानव जाति के कृपावंद हैं। गाय की सेवा के लिए यहाँ रात-दिन लगभग 1400 आदमी काम करते हैं। यह फार्म अरबस्तान की शुष्क और बंजर जमीन पर 20 साल पूर्व स्थापित किया गया था। रेगिस्तान में जो कुछ कठिनाईयाँ होती हैं, उसका सामना करते हुए यह फार्म तैयार किया गया जो आज विश्व के अच्छे फार्म में गिना जाता है।

अलशफीअ फार्म में इस समय कुल 36 हजार गायें हैं। इनमें 5 हजार भारतीय नस्ल की हैं। भारतीय गायों का दूध सेवन करने वाला एक विशेष वर्ग है। रियाद स्थित शाही परिवार में भारतीय गायों का सौ लीटर दूध जाता है। शेष मात्रा ऊंटनी के दूध की होती है। फार्म में जो भी अधिकारी काम करते हैं उन्हें कोपेन हेगन अथवा न्यूजीलैंड की किसी डेयरी का 5 साल का अनुभव होना अनिवार्य है। अलशफीअ फार्म ने लोगों के मन में यह विश्वास पैदा कर दिया है कि डेयरी का उद्योग भी एक लाभदायक उद्योग है। इस समय अलशफीअ फार्म की गायों के प्रतिवर्ष 16 करोड़ 50 लाख का दूध निकाला जाता है। जो गायें दूध देना बन्द कर देती हैं उनका अलग से विभाग है। उन्हें कत्लखाने में नहीं भेजा जाता है बल्कि उनके गोमूत्र और गोबर का उपयोग खाद के रूप में होता है। मर जाने के बाद उनका चमड़ा निकाल लिया जाता है, लेकिन उनके मांस एवं अन्य अवयवों को फार्म में दफन कर दिया जाता है।

गायों को नहलाने से लेकर चराने तक में फार्म के कर्मचारी इस तरह से तल्लीन हो जाते हैं जैसा कि भारत के गोपाल कभी इन गायों के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते थे।

जैन प्रचारक से साभार

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एंव आर्य समाज लाजपत राय चौक हिसार के संयुक्त तत्वावधान में

प्रान्तीय युवा निर्माण शिविर

सी.ए.वी. हाई स्कूल, पुरानी मण्डी रोड़, हिसार

31 मई 2015 से 5 जून 2015 तक

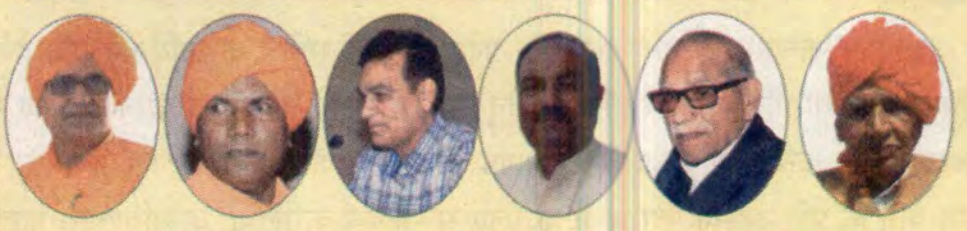

उद्घाटन समारोह :- 31 मई 2015 सांय 4 बजे
आशीर्वादः- स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति, धीरणवास गुरूकुल
अध्यक्षताः- स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली
उद्घाटन :- श्री अनिल राव (आई.पी.एस.) कमीश्नर हिसार रेंज
ध्वजारोहण :- चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मन्त्री, हरियाणा सरकार
मुख्यवक्ता :- श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामन्त्री सा.आ.यु. परिषद्
आचार्य हरपाल शास्त्री योग सम्राट

संकल्प महायज्ञ
प्रतिदिन प्रातः 8 बजे

सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध
भव्य शोभा यात्रा
4 जून को सांय 4 से 6 बजे तक

योग प्रशिक्षण प्रतिदिन
प्रातः 5 से 7 बजे

भव्य व्यायाम प्रदर्शन एंव समापन समारोह
5 जून 2015 प्रातः 9 से 12 बजे

शिविर के दौरान मार्ग दर्शन करने वाले सन्यासी एंव वैदिक विद्वानः-
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल), स्वामी रामदेश जी (जींद), स्वामी चेतनानन्द जी (राजस्थान), श्री किरण जी सिंह सिंधू (शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे), आचार्य प्रमोद योगार्थी, अतर सिंह क्रान्तिकारी, आचार्य रामस्वरूप, कल्याणी आर्या, कुलदीप आर्य बिजनौर, श्री बलबीर सिहँ, चौ. युद्धवीर आर्य, जाण्डवाला, श्री नन्दराम सांगवान, श्री महावीर सिंह पूर्व तहसीलदार, विनाद कुमार

नई पीढ़ी को देश भक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारित एंव चरित्रवान बनाने के लिए शिविर में अवश्य भेजें।

विशेष उपस्थितिः- चौ. बदलूराम आर्य, सेठ बजरंग लाल गोयल, रमेश कुमार लीखा, राधेश्याम आर्य, नरेन्द्रपाल मिगलानी, जसवन्त आर्य, सीता राम बेरवाल, शशिबाला, सन्नो देवी आर्या

निवेदकः- देवेन्द्र सैनी (प्रधान), दलबीर आर्य (कार्यकारी प्रधान), महेन्द्र आर्य (महामन्त्री), सतप्रकाश आर्य (कोषाध्यक्ष), सतपाल अग्रवाल (प्रवक्ता), जंगवीर लाम्बा, मा. जयवीर सोनी, श्याम आर्य, विनोद आर्य, सुभाष आर्य, रत्न बंसल, रामअवतार, चुन्नीलाल, राजमल डाका, बलराज मलिक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (हिसार) हरियाणा

शिविर कार्यालयः- आर्य समाज लाजपत राय चौक, हिसार
प्रान्तीय कार्यालयः- स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम (टिटौली) रोहतक (हरि.)

9416438705, 9416489210, 9354840454, 9416547688

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारी स्त्री परम शक्ति है

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन एवं महिला समता मंच के संयुक्त तत्वावधान में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

महर्षि दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 6 जून से 12 जून 2015 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

आशीर्वाद : स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्वामी इन्द्रवेश

500 कन्याएं भाग लेंगी

कन्याओं को चरित्र, नैतिकता, साहस, स्व-सुरक्षा एवं संयम की भावनाओं से ओत-प्रोत करने के लिए शिविर में अधिक से अधिक कन्याओं को भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

शिविर में विशेष

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- उच्च कोटि की व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, प्राणायाम, जूडो कराटे आदि शारीरिक एवं आत्म रक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आवश्यक नियम व निर्देश

- इच्छुक छात्राएं 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता-पिता या विद्यालय के प्राचार्य द्वारा अनुमोदित कराकर 5 जून, 2015 तक प्रान्तीय कार्यालय में जमा करवा दें।
- वेशभूषाः- सफेद सूट, सफेद जुराब, सफेद जूते, केसरिया दुपट्टा, ट्रैक-पैंट, टी-शर्ट, ऋतु अनुकूल बिस्तर, कापी, पैन, टार्च आदि साथ लाएं।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लाएं।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

निवेदक

कु. पूनम आर्या	श्रीमती सुनीता आर्या	कु. प्रवेश आर्या
शिविराध्यक्ष	सह-संयोजक	संयोजक
	9416817794	9416630916

प्रबन्ध समिति : कु. रीकू आर्या (रोहतक), कु. विकास आर्या (रोहतक), कु. मंजू आर्या, जगमतिमलिक कैथल, कु. शशि आर्या (रोहतक), राजबाला आर्या, कु. सोनिया व विनिता, सुषमा आर्या, सुमन आर्या, मुकेश आर्या, संगीता आर्या, पूजा आर्या, इन्दू आर्या, किरण आर्या, ज्योति, सुनीता, कीर्ति आर्या, रीमा आर्या, पूनम आर्या।

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा), email : yuvakparishad@gmail.com

आर्य समाज गंज, मुरादाबाद की शताब्दी के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. लखनऊ के तत्वावधान में

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन मुरादाबाद का भव्य आयोजन

30 एवं 31 मई, 2015 (शनिवार एवं रविवार)

स्थान – महाराजा हरिश्चन्द्र महाविद्यालय, लाजपतनगर, मुरादाबाद (उ. प्र.)

महोदय,

आपको जानकर हर्ष होगा कि उत्तर प्रदेश में आर्य समाज के कार्य को गति देने के लिए एवं भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण हेतु अच्छे संस्कारों को जागृत करने के लिए नारी जागरण द्वारा कन्या भ्रूण हत्या जैसे महापाप को समाप्त करने के लिए नशामुक्ति हेतु यज्ञ एवं योग के प्रति आस्था पैदा करने के लिए सामाजिक कुरीतियाँ, अन्धविश्वास पाखण्ड से युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है, समाज एवं परिवारों में मधुरता लाने के लिए प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं आपकी उपस्थिति आपके परिवार में सुख, शांति एवं स्वास्थ्य का वातावरण पैदा करेगी तथा परिवार में आत्मीय वातावरण से वैदिक संस्कृति सभ्यता की रक्षा होगी। आज माता-पिता को सम्मान मिले, वृद्धों से आशीर्वाद मिले यह सम्मेलन आपके जीवन में संजीवनी बनकर आशा, उत्साह प्रसन्नता का वातावरण पैदा करेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार करने के लिए आज ही मुरादाबाद आने का निश्चित संकल्प करें। इस सम्मेलन में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन युवा सम्मेलन, नारी जागरण सम्मेल, चरित्र निर्माण सम्मेलन, पर्यावरण सम्मेलन एवं वेद विज्ञान सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। सम्मेलन की सफलता के लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य उच्च कोटि के संन्यासी, विद्वान, उपदेशक, आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप अपने-अपने क्षेत्रों से अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ावेंगे। यह हमारा सौभाग्य होगा।

नोट - आपकी समाज से कितने लोग पधार रहे हैं इसकी सूचना
दूरभाष :-0522-2286328 पर देने की कृपा करें।

कार्यक्रम प्रतिदिन

प्रातः 5 से 6.30 बजे तक योग साधना, आसन, प्राणायाम द्वारा रोगनिवृत्ति प्रशिक्षण
प्रातः 7 से 9.30 बजे तक यज्ञ भजन आध्यात्मिक उपदेश
प्रातः 10 से 12.30 बजे तक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह
दोपहर 12.30 से 6.00 बजे तक भजन-उपदेश सम्मेलन
रात्रि 7.00 से 10.00 बजे तक भजन-उपदेश सम्मेलन

नोट : 1. सम्मेलन की सफलता के लिए आपका हर प्रकार का सहयोग अपेक्षित है।
2. आपके भोजन-आवास की व्यवस्था सम्मेलन स्थल पर होगी।
3. मुरादाबाद, दिल्ली-लखनऊ मार्ग पर स्थित है।
4. ऋषि लंगर हेतु आप खाद्यान्न सामग्री दान देकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।
5. यजमान धोती कुर्ते में ही वेदी पर पधारें।

निवेदक

देवेन्द्र पाल वर्मा सभा प्रधान | **धर्मेश्वरानन्द सरस्वती** सभा मंत्री | **डॉ. धीरज सिंह** सभा कोषाध्यक्ष | **ज्ञानेन्द्र आर्य** मुख्य संयोजक

संयोजक : रमेश सिंह एडवोकेट, मो.: 8192013251

सह संयोजक : सर्वश्री राममुनि आर्य, अभय सोती, निर्मल आर्य रस्तोगी, जसवन्त सिंह, अशोक कुमार, आशा जैमिनी, राम लच्छी यादव, सतीश मदान।

संयोजक समिति एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद

सम्पर्क सूत्र - 9837078575, 9927341948, 9758167211, 8192013251

मत्कृते कथं न?

– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, रायबरेली

सात्विकं कर्म कर्त्तुं च वक्तुं हितम्।
धर्मकार्ये समाह्वातुम् एवं मुदा।
शब्दशास्त्रे त्वदीये परं हे प्रभो,
मत्कृते नो द्वितीया विभक्ति कथमं?
केन वृद्धा स्तथा मातरः सेविताः।
केन पुत्राः समाजे सुखं वर्धिताः।
उत्तरं प्राप्तुमत्र प्रभो! निश्चितम्,
मत्कृते नो तृतीया विभक्तिः कथम्?
निर्बलोऽहं विभो! निर्धनोऽहं प्रभो।
संस्तुवे नामधेयं सदा ते परम्।
शब्दशास्त्रे त्वदीये जगन्नाथ! हे।
मत्कृते नो चतुर्थी विभक्तिः कथम्?
दुर्जनाश्चाऽथ कस्मात् खला बिभ्यति,
संस्कृतं चाऽपि कस्माद् अधीते जनः।
शब्द शास्त्रे तदस्योत्तरे हे! प्रभो।
मत्कृते पञ्चमी नो विभक्तिः कथम्?
काव्य माधुर्यमेतत् भवेत् कस्य मो।
वाक्य सौन्दर्यकेतत् मतं कस्य वा?
शब्दशास्त्रे त्वरे। सच्चिदानन्द! ते।
मत्कृते किं न षष्ठी विभक्तिर्भवेत?
कुत्र भक्तिश्च विश्वास आस्था प्रभो।
त्वां प्रति श्रद्धया वा मनः संस्थितम्।
शब्द शास्त्रे त्वदीये तदस्योत्तरे,
मत्कृते सप्तमी नो विभक्तिः कथम्?

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

हर घर में रखने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक

'चिकित्सा भास्कर'

लेखक – वैद्य इन्द्रदेव
सम्पादक – मधुर शास्त्री

चरक संहिता के अनुसार रोग एवं उनकी चिकित्सा – रोगों का निदान, अनेक अनुभवी संन्यासी, महात्मा तथा जन साधारण के अनुभव के आधार पर गुप्त रोगों पर किए गए प्रयोग, निर्धन, धनी व्यक्तियों के लिए शास्त्र प्रमाण अनुभव द्वारा पुष्ट, आयुर्वेद चिकित्सा का प्रामाणिक एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। अतः सभी ग्राहकों के हित में निवेदन है कि वे उपरोक्त पुस्तक को खरीदने के लिए प्रकाशक से सीधा सम्पर्क करें।

मूल्य 200/- रुपये, डाक व्यय निःशुल्क।

प्राप्ति स्थान - मधुर प्रकाशन
2804, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
- मधुर शास्त्री, मो.:-9810431857

आर्य समाज की गतिविधियाँ

वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

प्रख्यात साहित्यकार, सहृदय कवि एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को महात्मा हंसराज जी की 125वीं पावन जयन्ती के अवसर पर 22 अप्रैल, 2015 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने संयुक्त रूप से वैदिक विद्वान के रूप में सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए देवभूमि सोलन (हिमाचल प्रदेश) में एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

45 ग्रन्थों के यशस्वी लेखक डॉ. कथूरिया के 12 ग्रन्थ आर्ष चिन्तन पर हैं। सम्मान रूप में उन्हें शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं 31 हजार रुपये की सम्मान राशि विनम्रता पूर्वक दोनों संस्थाओं के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने भेंट की। डॉ. कथूरिया का परिचय देते हुए कार्यक्रम के संचालक ने कहा कि प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया देश के शीर्षस्थ आर्य विद्वानों में से एक हैं। महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क ने आपको आर्य समाज और यज्ञ संस्कृति से जोड़ दिया। आप तपोनिष्ठ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। डी. लिट् की उच्चतम उपाधि के साथ आपने सिद्धान्तशास्त्री, विद्यावाचस्पति, योगदर्शन आदि की परीक्षायें भी विशेष योग्यता से उत्तीर्ण की है। पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के निकट सम्पर्क में भी आप रहे हैं। आर्य समाज बी ब्लॉक जनकपुरी के संस्थापक सदस्यों में से एक डॉ. कथूरिया ने देश, समाज, साहित्य, संस्कृति, वैदिक धर्म आदि की लेखनी और वाणी से स्पृहणीय सेवा की है।

डॉ. कथूरिया प्रभावशाली प्रवचनकर्ता, यशस्वी लेखक, निःस्वार्थ समाज सेवी, प्रख्यात् शिक्षा शास्त्री एवं लगभग 70 पुरस्कारों सम्मानों से विभूषित हैं। जिनमें आर्य विभूषण पुरस्कार, वेदश्रीपुरस्कार, अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान, वेदमार्तण्ड पुरस्कार आदि उल्लेख्य हैं। डॉ. कथूरिया ने मारीशस जाकर वहाँ की शैक्षिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्यभाषा विषयक एवं आर्य समाजों की प्रगति की जानकारी प्राप्त की है। ऐसे वैदिक विद्वान को सम्मानित करने में हम गौरव का अनुभव करते हैं।

इस अवसर पर महात्मा हंसराज जी को दोनों संस्थाओं के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी, महात्मा चैतन्यमुनि जी आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कई नई जानकारियाँ दी। सभी अभ्यागतों का स्वागत एवं आभार सभामंत्री श्री एस. के. शर्मा ने किया।

– चन्द्रशेखर शास्त्री, प्रधान सम्पादक 'अध्यात्म पथ'

नेट टी. वी. से रहें दूर, बने संस्कारित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की युवाओं से अपील

छपरौली : क्षेत्र के आदर्श नंगला के एमडी इंटरनेशनल स्कूल में बालिकाओं के लिए 5 दिवसीय आत्मरक्षा व नैतिक संस्कार शिविर के उद्घाटन पर वक्ताओं ने कहा कि नेट व टी. वी. युवा वर्ग को गुमराह कर रहे हैं इससे नैतिक पतन हो रहा है। जो देश व समाज के लिए हानिकारक है। इससे युवाओं के साथ-साथ अभिभावकों की जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बच्चों के चहुमुँखी विकास के लिए आगे बढ़े।

कार्यक्रम में बोलते हुए नई दिल्ली की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि अपने बच्चों पर अभिभावक यह ध्यान अवश्य रखें कि वह मोबाइल का प्रयोग करके क्या कर रहा है क्या देख रहा है। अगर समय से ध्यान नहीं दिया गया तो समय हाथ से निकल जायेगा जो समाज व देश को पतन की राह पर ले जायेगा। नेट पर दिखाई जा रही फूहड़ सामग्री पर बच्चे रुचि लेते हैं और वे अपना भला या बुरा समझने की स्थिति में नहीं होते। इस शिविर में बालिकाओं को आत्मरक्षा के तरीके सिखाए जायेंगे इस दौरान बिरजानन्द जी, आचार्य सन्तराम (रोहतक), रामफल आर्य (बड़ौली), कॉलेज की प्रधानाचार्या डॉ. सुनीति आचार्या कार्यक्रम के संयोजक शिव कुमार आर्य आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे।

आर्ष कन्या गुरुकुल हजारी बाग में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य समाज हजारीबाग द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारीबाग (झारखण्ड) में 1 मई से 30 मई तक प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेशार्थ कन्याओं की आवश्यक अवस्था 9 से 12 वर्ष। कक्षा स्तर चतुर्थ, पांचवीं, छठीं। आर्ष पाठ विधि के आधार पर विदुषी बनाने की तीव्र इच्छा रखने वाले ही माता-पिता अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलायें। असमर्थ कन्याओं के लिए निःशुल्क प्रबन्ध एवं समर्थ कन्याओं के लिए केवल 500 रुपये मासिक सहयोग राशि। आर्ष पाठ के साथ-साथ आधुनिक विषयों, भाषाओं एवं परीक्षाओं का सुप्रबन्ध। कन्याओं की योग्यता परीक्षण के उपरान्त प्रवेश दिया जायेगा। किसी विशेष परिस्थिति में नियमों में परिवर्तन संभव।

सम्पर्क : आचार्य कौटिल्य, 06546-263706, 9430309525, 7277437245

महाशोक

दयानन्द मठ चम्बा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ऋषि कुमार का आकस्मिक निधन

बहुत दुःख के साथ सूचित किया जा रहा है कि आर्य जगत् की महान विभूति चम्बा के स्वामी सुमेधानन्द जी के सान्निध्य में रहकर उनके दयानन्द मठ समेत सारा काम संभालने वाले आचार्य महावीर जी के एकमात्र पुत्र श्री ऋषि कुमार जी का आकस्मिक निधन हो गया। 34 वर्षीय ऋषि कुमार बेहद उत्साही राष्ट्रसेवा में समर्पित युवा थे। दिल की तकलीफ होने पर वे लुधियाना के दयानन्द मेडिकल कॉलेज में भर्ती हुए थे।

कुछ समय बाद उनका हृदयाघात से 24 मई, 2015 को असामयिक देहावसान हो गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी इस दुःखद सूचना के मिलते ही दयानन्द मठ चम्बा के लिए रवाना हो गये। प्रखर युवावस्था में इस तरह की मौत ने पूरे आर्य जगत को शोकाकुल कर दिया है। सार्वदेशिक सभा परिवार ऋषि कुमार जी की दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हैं। उनकी पत्नी एवं 9 वर्षीय पुत्र के प्रति, पिता आचार्य महावीर जी और ससुर आचार्य रामानन्द जी के प्रति, माता सरस्वती देवी जी और स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रति हम सबकी हार्दिक संवेदना। सार्वदेशिक सभा परिवार इस दुःख की घड़ी में उनके साथ है।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ. प्र.)

प्रवेशार्थ सूचना

गंगा किनारे शान्त प्रकृति के वातावरण में स्थित गुरुकुल पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। सं. वि. वि. वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक मान्यता प्राप्त एवं उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् लखनऊ से मध्यमा (12) तक मान्यता प्राप्त तथा सुन्दर दिनचर्या धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षण योगासन, प्राणायाम, आर्यवीरदल का व्यायाम प्रशिक्षण अनिवार्य रूप में प्रदान किया जाता है। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा की भी सुन्दर व्यवस्था है। अपने बच्चों को देशभक्त, गुरुभक्त, मातृ-पितृ भक्त बनाने के लिए आज ही संकल्प लेकर शीघ्र सम्पर्क करें। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज की साधना स्थली पर आपका हार्दिक स्वागत है।

– राजीव आचार्य, प्राचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय पूठ, गढ़मुक्तेश्वर, जिला-हापुड़ (उ. प्र.), मो.:-9837402192

वैदिक परिप्रेक्ष्य में कथा व प्रवचन आयोजित

आर्य समाजों के सत्र व कार्यक्रम केवल भजन हवन एवं प्रवचन तक ही सीमित हैं, इस मिथक को तोड़ते हुए आर्य समाज मानसरोवर जयपुर ने शाश्वत वैदिक संस्कृति के उन घटनाक्रमों को सामने लाने का प्रयास किया है जो सामान्यजन के लिए अनजाने हैं। फरवरी व मार्च महीनों में कठोपनिषद् एवं मार्यादा पुरुषोत्तम राम के कृतित्व एवं जीवन पर प्रवचनों का आयोजन हुआ। कठोपनिषद् कथा एवं इसकी गूढ़ अन्तर्कथाओं पर सुग्राह्य भाषा में डी. ए. वी. कॉलेज के पूर्व प्रो. डॉक्टर कृष्णपाल सिंह ने 26 फरवरी, 2015 से सप्ताह भर प्रवचन किए।

दिनांक 21 मार्च, 2015 से 29 मार्च, 2015 तक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन एवं कृतित्व पर वाल्मिकीय रामायण एवं तुलसीदास के रामचरित मानस में तादात्य रखते हुए आर्य जगत के ख्याति प्राप्त प्रवक्ता डॉ. रामपाल विद्या भास्कर ने अपने विचार रखे।

उल्लेखनीय है कि दोनों ही सत्रों में आर्य सभासदों के अतिरिक्त पौराणिक श्रोता भी उत्सुकता से सम्मिलित हुए।

– ईश्वर दयाल माथुर

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

हे समर्थ परमेश्वर!

दृते दृह मा।
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।।

—यजु० ३६/१६

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः।। देवता—ईश्वरः।। छन्दः—पादनिचृद्गायत्री।।

विनय—हे जगदीश्वर! मैं चाहता हूँ कि अब मैं तुम्हारी अध्यक्षता में ही जीऊँ–तुम्हारी देख–रेख में– तुम्हारी आँखों के नीचे ही अपना जीवन व्यतीत करूँ। मुझे यह सदा स्मरण बना रहे कि तुम मुझे देख रहे हो। मेरा एक–एक कार्य, मेरी एक–एक चेष्टा, एक–एक गति तुम्हें साक्षी रखकर की गई हो। इस प्रकार तुम्हारे सम्यक् दर्शन में तुम्हें देखता हुआ मैं चिरकाल तक जीऊँ। सच तो यह है कि जब मैं तुम्हारी ठीक–ठीक अध्यक्षता में अपना जीवन व्यतीत करूँगा, तो मेरा जीवन स्वाभाविक रूप से ऐसा चलेगा कि यह स्वयमेव दीर्घजीवी हो जाएगा, अतः मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि मैं कभी तुम्हारे सन्दर्शन से पृथक् न हो जाऊँ, परन्तु तुम्हारे सन्दर्शन में जीना आसान काम नहीं है। मैं यह जानता हूँ कि तुम ही मेरे जीवन हो, मेरी शक्ति हो, मेरी आत्मा हो, तो भी मैं निर्बलतावश तुम्हें सदा भूला रहता हूँ। सांसारिक वायु के झोंकों के थपेड़ों से मेरी सुध–बुध ऐसी भूली रहती है कि मुझमें तुम्हारी स्मृति जाग्रत नहीं रह सकती। इसलिए हे जगदीश्वर! मेरी तो तुमसे यह प्रार्थना है कि तुम मुझे पहले दृढ़ बना दो, मज़बूत बना दो, चट्टान बना दो। हे दृते! हे सर्वशक्ति स्वरूप! तुम मुझे ऐसा दृढ़ बना दो कि संसार की घटनाएँ मुझे चलायमान न कर सकें। मैं सदा तुम्हें देखते रहने का यत्न करता हूँ– तुम्हें देखते रहते हुए ही अपने सब कर्म करने का यत्न करता हूँ, परन्तु यह बहुत थोड़ी देर चलता है। कोई भी सांसारिक खुशी या कोई दुःख, कोई चिन्ता आने पर मेरा वह सात्त्विक ध्यान जाता रहता है। कोई भी नई–सी बात होने पर मेरा ध्यान उधर खिंच जाता है और मैं उस तेरे सन्दर्शन की सुखमय अवस्था से गिर जाता हूँ। इसलिए, हे दृते। मैं दृढ़ता का भिखारी हुआ हूँ। मैं जानता हूँ कि जब मैं दृढ़ हो जाऊँगा तथा उस दृढ़ता द्वारा सुख में, दुःख में, सम्पत् में, विपत् में सदा तुम्हारा यह सन्दर्शन करते रहने का अभ्यासी हो जाऊँगा तो धीरे–धीरे तुम्हारा सम्यक् दर्शन मुझमें ऐसा समा जाएगा कि यह फिर मुझसे जुदा न हो सकेगा और तब मुझे तुम्हारा ध्यान करने की भी आवश्यकता न रहेगी। जैसे हम दिनभर सूर्य–प्रकाश द्वारा ही सब काम करते हैं, परन्तु हमें यह याद रखने की आवश्यकता नहीं होती कि हम सूर्य–प्रकाश में हैं, वैसे ही तब मैं बिना यत्न किये तुम्हारे सन्दर्शन के प्रकाश में चौबीसों घण्टे रहने–सहने और जीवन व्यतीत करने वाला हो जाऊँगा, अतः हे दृते। मुझे ऐसा दृढ़ बना दो कि मैं कभी तुम्हारे सन्दर्शन से न हट सकूँ।

शब्दार्थ—**दृते**=हे सर्वसमर्थ परमदृढ़ परमेश्वर। **मा**=मुझे **दृंह**=दृढ़ बना दे, जिससे कि मैं **ते संदृशि**=तेरे सन्दर्शन में, तेरी ठीक दृष्टि में **ज्योक्**=चिरकाल तक **जीव्यासम्**=जीता रहूँ **ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्**=तेरे सम्यक् दर्शन में दीर्घ आयु तक जीवित रहूँ।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.co
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है